S/36
S/36

आपात् स्थिति और भारतीय मजदूर संघ

1.14

(दि० २५ दिसम्बर, १९७६ को बम्बई में आयोजित
भारतीय मजदूर संघ की केन्द्रीय कार्यसमिति
के समक्ष "मा० दत्तोपन्त ठेंगड़ी"
का भाषण)

मूल्य १-५० पैसे

114
BMS

श्री दत्तोपन्त ठेंगड़ी का कार्यकर्ताओं के समक्ष

भाषण

मैं इस समय उपस्थित नहीं रह सकता। मुझे आशा है कि इसके लिए आप मुझे क्षमा करेंगे। वैसे आप जानते हैं कि २५ जून, १९७५ के पश्चात देश में जो असाधारण परिस्थितियाँ निर्माण हुई, उनके फलस्वरूप एक असाधारण कदम मुझे भी उठाना पड़ा। वह यानी भारतीय मजदूर संघ के कार्य से मेरी निवृत्ति। आप जानते हैं कि मैं हृदय से हमेशा भारतीय मजदूर संघ का ही हूँ किन्तु असाधारण परिस्थिति में एक असाधारण कदम इसी नाते यह निवृत्ति करनी पड़ी और वह भी भारतीय मजदूर संघ के हित की रक्षा के लिए किया गया। आप इस बात को पूरी तरह ठीक ढग से समझ लेंगे-यह मुझे विश्व स है। वैसे मेरे निवृत्ति के पश्चात माननीय बड़े भाई के समर्थ हाथों में भारतीय मजदूर संघ के नेतृत्व की बागडोर सौंप दी गयी है। और उनके नेतृत्व में पिछले कुछ महीनों में भारतीय मजदूर संघ ने जो प्रगति की है, उससे यह स्पष्ट होता है कि वह नेतृत्व करने के लिए समर्थ हैं। वैसे यह भी स्पष्ट होता है कि भारतीय मजदूर संघ का आधार व्यक्ति निष्ठा नहीं तो कार्यकर्त्ताओं का आदर्श-वाद है। कोई भी व्यक्ति पदाधिकारी के रूप में आये अथवा जाये हमारे कार्यकर्त्ताओं का आदर्शवाद इतना प्रबल है कि हर परिस्थिति में व्यक्ति निरपेक्ष, केवल आदर्शों के आधार पर वे अखण्ड कार्य करते ही रहेंगे। और इसी कारण पिछले महीनों में सभी विरोधों के बावजूद भारतीय मजदूर संघ का काम आगे ही बढ़ा है।

वैसे हम जानते हैं कि जो असाधारण परिस्थिति निर्माण हुई वह भारतीय मजदूर संघ के लिए अनपेक्षित बात नहीं थी। अमृतसर अधिवेशन में स्पष्ट रूप से यह कल्पना सबके सामने रखी गयी थी कि किस तरह की असा-धारण परिस्थिति आने वाली है और उसका मुकाबला करते समय हमें यह ध्यान में रखना पड़ेगा कि यद्यपि हम विशुद्ध ट्रेड यूनियन के आधार पर खड़े हैं तो भी राजनीति और राष्ट्रनीति ये दो अलग बाते हैं।

लोकनीति राष्ट्रनीति के प्रति हमारा जो कर्तव्य है, उसका निर्वाह करने में भा० म० सं० पीछे नहीं रहेगा, अग्रसर रहेगा। यह बात अमृतसर अधिवेशन में कही गयी थी। लोकनीति और राष्ट्रनीति की बातें मजदूर क्षेत्र में कार्य करने वाले संगठन का कर्त्तव्य, उसका निर्वाह करने की जिम्मेदारी दो महीने के अन्दर अन्दर भारतीय मजदूर संघ पर आयी। इससे भा० म० संघ की दूर दर्शिता, आने वाली घटनाओं का भा० म० संघ अंदाजा ले सकता है-- यह बात स्पष्ट होती है। और साथ ही साथ केवल हमने आने वाली घटनाओं का अंदाजा ही नहीं लगाया तो उसके कारण आने वाली जिम्मेवारी का निर्वाह करने की तैयारी की और इसके कारण बिल्कुल Emergency के प्रारम्भ से लेकर आज तक जहाँ तहाँ हमारे रहते हुये मजदूरों के हितों पर सरकार और मैनेजमेन्ट के द्वारा कुठाराघात हुआ, वहां-वहां हमारे कार्यकर्त्ता हिम्मत के साथ आगे बढ़ गए और डिमान्सट्रेशन से लेकर हड़ताल तक सभी वैध मार्गों का अवलम्ब करते हुए मजदूरों को दिलासा देने की उन्होंने पूरी कोशिश की।

हमने इस बात को ठीक ढंग से समझ लिया कि मजदूरों का हित राष्ट्र हित से अलग नहीं है। मजदूर हित और राष्ट्र हित दोनों एक ही दिशा में जाने वाले हैं। जनतन्त्र के अभाव में मजदूर Trade unionism के आधार पर चल नहीं सकता। Genuine Trade unionism के अभाव में इस देश में जनतन्त्र चल नहीं सकता। जनतन्त्र और Trade Unionism एक दूसरे पर परस्पर अवलम्बित हैं। और इस दृष्टि से जब हमारे कार्यकर्ताओं ने देखा कि जनतन्त्र की हत्या हो रही है तो मजदूरों के हितों की रक्षा एवं जनतन्त्र की रक्षा दोनों को ख्याल में रखते हुए एक के बाद एक प्रभावी कार्यक्रम अपने हाथ में लिए। और इसी कारण हमने देखा कि हिन्दुस्तान की लोक संघर्ष शक्ति ने जब अखिल भारतीय स्तर पर तानाशाही के विरुद्ध आह्वान किया और सत्याग्रह के रूप में उन्होंने अपनी शक्ति का आविष्कार किया तो इस अवधि में मजदूरों की माँगों को जनतन्त्र के आधार पर लेते हुए भारतीय मजदूर संघ के कार्यकर्त्ताओं ने एक बहुत बड़ा संघर्ष छेड़ा, जिसमें ७ हजार से अधिक मजदूरों ने मजदूर तथा जनतन्त्र विरोधी कानूनों का उल्लघन किया, जिसके लिए हमारे पांच हजार से अधिक कार्यकर्ताओं को जेल में जाना पड़ा। यह सारी बातें हमारे कार्यकर्ताओं ने सहर्ष स्वीकार कीं। क्योंकि वे देश भक्त हैं, जन तन्त्र के समर्थक हैं और देशहित और मजदूर हित एक ही दिशा में

जाने वाले हैं इस बात की जानकारी उन्हें पूरी तरह से है। इस तरह से एक शानदार कार्य उन्होंने किया हुआ है।

अतः एक मोड़ पर देश खड़ा है। हम भी आज की परिस्थितियां क्या हैं, यह समझने के लिये। आने वाले Challenges क्या हैं इसका विचार करने के लिए और इनका मुकाबला हम कैसे कर सकते हैं- यह उपाय-योजना सोचने के लिये, यहां आये हैं।

और इस दृष्टि से आज की परिस्थिति का हम ठंडे दिमाग से विचार करें यह आवश्यक है। (Emergency) के पश्चात किस तरह से जनतन्त्र की हत्या हुई हम सब जानते हैं। तानाशाही का प्रारम्भ हो ही चुका था किन्तु उस पर अधिकृत मोहर लग गयी ४४ Amendment पास होने के पश्चात अब तानाशाही की इस देश में निर्माण होने की प्रक्रिया पूर्ण हुई। उस पर सील लग गया। और इसके कारण निश्चित ही नयी परिस्थितियां निर्माण हुयीं।

इसके पूर्व यह बात ठीक है कि जनतन्त्र का Progressive eroism हो रहा था (Dictatorship) का (advance) हो रहा था। वह एक (process) में बात थी। अब वह (process accomplish) हो गयी है, पूरी हो गई है। और इसके कारण एक नयी परिस्थिति देश में निर्माण हुई। इस परिस्थिति का मुकाबला कैसे किया जाये, यह सोचने के पहले इस परिस्थिति की विशेषतायें क्या हैं यह देखना आवश्यक है। यह बात स्पष्ट है कि हम तानाशाही को खत्म करना चाहते हैं। यह भी बात स्पष्ट है कि 44th amendment के पास होने के पश्चात लोकतन्त्र के ढांचे के अन्तर्गत हमें जो freedom और facility अब तक थी वह समाप्त हो चुकी है। इसके कारण लड़ने की वह जो शक्ति थी उससे भी हमें वंचित रहना पड़ेगा। यह बात सत्य है और इसके कारण अब संघर्ष आगे कैसे चलाया जा सकता है इस तरह का एक संभ्रम जनतन्त्र के समर्थकों में आया हुआ दिखाई देता है। इस अवस्था में हम परिस्थिति का विचार करें कि वास्तव में qualitative changes की दृष्टि से 44 amendment के कारण जैसे मैंने कहा यह बात सही है यद्यपि democratic rights erosion हो रहा तो भी अब तक कुछ न कुछ democratic structure और इसके अन्तर्गत हमें कुछ facilities और freedom प्राप्त हो सका

जो अब प्राप्त नहीं होगा यह disadvantage है। किन्तु इसके कारण यह सोचने की आवश्यकता नहीं कि संघर्ष आगे चलाने की दृष्टि से हम केवल disadvantageous position में हैं। नयी परिस्थिति के कुछ advantageous position भी हैं जिसको हमको समझ लेना चाहिए।

पहली बात, अब विहंगावलोकन की स्थिति में emergency के पश्चात और ४४th amendment पास होने तक परिस्थितियां कैसी कैसी रहीं ? संघर्ष का स्वरूप क्या रहा ? मैं अत्युक्ति न करते हुये यह कह सकता हूं कि यह एक अलग ढंग का संघर्ष रहा। इस सघर्ष में हमशा पहले करने का काम प्रधानमन्त्री ने किया। और जनता ने केवल उसकी प्रतिक्रिया के रूप में कुछ न कुछ किया है। हर समय उनके पहले करना, जनता द्वारा अपनी प्रतिक्रिया देना। इस संघर्ष के Issues प्रधानमन्त्री ने फ्रेम किए हुए थे। जनता द्वारा फ्रेम किए हुए नहीं थे। इस संघर्ष का रण क्षत्र Battle field प्रधानमन्त्री ने चुन लिया था जनता ने नहीं चुना था। Emergency issue उन्होंने खड़ा किया। रण क्षेत्र उनके Choice का था। Press freedom), संघ जैसी संस्था पर प्रतिबन्ध लगाना आदि सारे Issues ऐसे नहीं थे कि जनता ने अपनी इच्छा से, अपनी सुविधा से यह Issues खड़े किये हुए हों ऐसी बात नहीं। पहल उन्होंने की। Choice of battlefield उनका था। She formed the issues प्रतिक्रिया के रूप में केवल जनता रही। और इसके कारण कुछ disadvantages भी थे।

अब तक जो Issues आए, वे Issues ऐसे नहीं थे जिनको आज हिन्दुस्तान ने Common man की जो level of political consciousness है उसको देखते हुए उसे Common's Issues कहा जाये। हो सकता है कि जहाँ leuel of political consciousness ऊँचा है ऐसे देश में शायद वे Issues Common man's issues बन सकते थे। किन्तु कई कारणो से हमारे देश में सर्व सामान्य आदमी का level of political consciousness छोटा है। और उसको देखते हुए वे उसके (Issues) नहीं थे। Common man के Issues नहीं थे। वे Issues क्या हैं यह समझना भी Common man की समझ के बाहर की बात थी। उसको समझाने का भले ही बाकी

लोगों ने प्रयास किया हो, स्वाभाविक रूप से उसको वह लोग कि यह मेरे issues हैं, ऐसी परिस्थिति नहीं थी। और इसी का परिणाम है कि इन issues को लेकर जो लोग खड़े हुए वे common man नही थे। व cadres थे, चाहे वे opposition parties के रहे हों या R. S. S. के। और बहुत थोड़ी मात्रा में सर्वसाधारण जनता ने प्रत्यक्ष participation किया यानी जो battle field था वह उनके choice का था। इतना ही केवल नहीं। तो इस बीच में जो common man issues हो सकते थे जो battle field हमारा battle field हो सकता था वे issues और वह battle field लेना हमारे लिए सम्भव नहीं था।

क्योंकि उन्होंने निर्माण किए हुए issues के लिए उन्होंने दिए हुये battle field पर हमें हमेशा हमारी कार्यकर्ताओं की सेना रखनी पड़ी। इसके कारण हमारे choice के battle field पर हम हमारे कार्यकर्ताओं को नहीं खड़े कर पाये।

मैं उदाहरण के लिये एक बात बताना चाहता हूँ। ठीक एक साल पहले किसान क्षेत्र में एक प्रश्ननिर्माण हुआ। हम न जानते थे कि वह जो common man s problem हो सकता था आगे भी होने वाला है। वह battle field हमारे choice का battle field था। और वह था किसानों द्वारा पैदा किए हुए माल की कीमत घट जाना। इसके कारण आम जनता परेशान थी। सारे ग्रामीण किसानों द्वारा उत्पादित माल की कीमतें घट गयी। इसके कारण एक असन्तोष था। और उसको प्रकट करने का काम हमारे कार्यकर्ता उन दिनों में कर सकते थे। भा० जनतन्त्र के समर्थक उन दिनों मे अगर आन्दोलन की बात सोचते तो निश्चित रूप से किसानों का समर्थन उनको प्राप्त होता। याने वह issues न common man's का issues था। वह battle field हमारे choice का था। और उसमें हम अधिक सफलता प्राप्त कर सकते थे। इस बात की जानकारी भी हमें थी। किन्तु चूँकि हम उसी समय दूसरे रणक्षेत्र में उलझे हुए थे जो उनके choice का था। उन्होंने Frame किए हुए issues के लिए था, हम इस तरह किसानों के प्रश्न पर ध्यान नहीं दे सके।

इस तरह यह बात नहीं है कि common man के issues आये

ही नहीं। हमारे choice का battle field हमें प्राप्त ही नहीं हो सकता था यह बात नहीं। लेकिन we could not avail of these factors because we were engaged elsewhere.

यह एक विशेषता अब तक जो संघर्ष हुआ है इस संघर्ष की है जो हमने ध्यान में रखनी चाहिये।

कई लोग ऐसा सोचते हैं कि डेढ़ साल का संघर्ष हुआ, लेकिन Masses ने हम लोगों का कितना साथ दिया ? Masses के तो Problems ही नहीं थे। जहां तक मजदूरों के Problems थे, जब वे problems निर्माण हुई तब भा० म० सं० उन problems को लेकर खड़ा हुआ। संघर्ष भी भारतीय मजदूर संघ ने छेड़ा जगह-जगह। वह सारा इतिहास आपके सामने हैं। आज भी भारतीय मजदूर संघ मजदूर क्षेत्र में मजदूरों की हितों के लिये पूरी तरह से सतर्क है और मजदूरों में जन शिक्षा ठीक ढंग से हो इस दृष्टि से क्रियाशील भी हैं। अभी-अभी आपात स्थिति और मजदूरों का शोषण इस दृष्टि का 'आपात स्थिति और मजदूर' यह हिन्दी पुस्तिका और labour 'search light on' यह अंग्रेजी पुस्तिका भा० म० सं० ने प्रसारित की है। और निकट भविष्य में, एक लेबर लाज का मजदूर क्षेत्र पर परिणाम और एक 44th constitutional amendment मजदूर क्षेत्र पर परिणाम इसका विस्तृत विवरण करने वाली पुस्तिकायें भारतीय मजदूर संघ प्रकाशित करने वाला है।

तो मजदूरों के संघर्ष के बारे में हम लोग सतर्क रहे, यह बात ठीक है। किन्तु आम जनता के problems अभी तक संघर्ष का विषय नहीं बने, जिनको आम जनता अपने problems समझती है distinctly. हमारे केवल समझाने के कारण नहीं—ऐसे problems को लेकर संघर्ष नहीं छेड़ा गया। वास्तव में वे आम जनता के problems थे, जिनके लिये संघर्ष हुआ, लेकिन वह अपने Problems हैं यह समझाने की level of consciousness आम जनता की नहीं थी और अब तक सारी पहले उनके प्रधान मन्त्री के पास थी। इसी तरह की पहले करने की उनको आवश्यकता भी रही। क्योंकि Dictatorship establish करने की process accomplish नहीं हुई, पूरी नहीं हुई थी, किन्तु अब 44th amendment के पश्चात जहाँ एक

तरफ अब तक प्राप्त होने वाली स्वतन्त्रता और सहूलियत हमारी नष्ट हुई यह disadvantage है, वहाँ अब उनकी process पूरे होने के कारण अब हमें disadvantage की position में ही क्यों न हो, किन्तु, हमारी सहूलियतें जिनको हम common man's issues समझते हैं, ऐसे issues को लेने की सहूलियत हमें प्राप्त होगी। हमारे choice का battle field हम ले सकेंगे। और इस तरह से अब इस पूर्व का संघर्ष और इसके बाद का संघर्ष इसमें कुछ qualitative change रहेगा। यह स्थान ध्यान में रखने योग्य बात है। यह बात सही है, 14 नवम्बर से 26 जनवरी तक जो पिछला सत्याग्रह हुआ था इस तरह का सत्याग्रह, immediately और बार-बार नहीं हो सकता। उस सत्याग्रह का purpose अलग था। जैसे मैंने कहा की qualitative change, 44th amendment के कारण परिस्थिति में आया है। इसका दूसरा भी पहलू में आपके सामने रखना चाहता हूँ। 44th amendment पास होने के पूर्व जैसे जनतन्त्र के ढाँचे के अन्तर्गत होता ही है आन्दोलन का immediate primary objectiue, registering the protest against Government policies, Registering the protest पर primary objective होता है। यह बात ठीक है कि हर registering the protest का अंततोगत्वा change of regime में कुछ constribution हो सकता है। किन्तु primary, objective, regis ering the protest...…………

जनतन्त्र के ढांचे के अन्तर्गत किसी भी आन्दोलन का हुआ करता है। अब 44th Amendment के पश्चात, तानाशाहीं की प्रक्रिया पूरी होने के पश्चात, किसी भी आन्दोलन को केवल regsterin the protest के नाते रखा नहीं जा सकता। ऐसा रखना याने अपनी और जनता की शक्ति का अपव्यय करना होगा। आत्मघात की भी बात यह होगी। तो उसके लिये यह आवश्यक है की, अंतिमलक्ष्य derecognition of government by the people यह रखते हुए उसी strategy के अन्तर्गत एक tacties के नाते जो कोई आन्दोलन छेड़ा जा सकेगा वह छेड़ा जाना चाहिए। Derecognition of the government by the people यह उद्देश्य छोड़कर for any thing short of it यही आन्दोलन किया जायेगा तो उससे आत्मघात के अलावा और कुछ भी हाथ में आने वाला नहीं है।

आन्दोलन तरह तरह का हो सकता है । किन्तु इसका उद्देश्य स्पष्ट रूप से आन्दोलन कर्ताओं के सामने होना चाहिए कि Will not stop until we dere cognise government यह qualitative change इस amendment पास होने के पश्चात परिस्थिति में आया हुआ है, यह समझ कर हमें अपनी अगली stretagy तय करनी पड़ेगी । जैसे मैंने कहा कि राष्ट्र नीति के अंग के रूप में ही भारतीय मजदूर संघ खड़ा रहेगा । राष्ट्र के सम्पूर्ण जनतांत्रिक शक्तियों के मोर्चे का एक अंग यह स्वरूप स्वाभाविक रूप से भारतीय मजदूर संघ का बन जाता है । इस दृष्टि से हमारी Strategy क्या रहे यह सोचना भी आज यहां एकत्र आने का हमारा उद्देश्य है । जहां हम हमारे संगठन पर आज विचार करेंगे । संगठन को और अधिक मजबूत कैसे बनाया जा सकता है, यह सोचेंगे । मालिक और सरकार के द्वारा मजदूरों के हितों पर होने वाले आक्रमणों का मुकाबला कैसे किया जा सकता है, यह सोचेंगे Immediate problems के बारे में सोचेंगे । वहां हमें यह भी सोचना पड़ेगा कि तानाशाही को खत्म करने के लिये जो एक Long range बृहत तथा प्रदीर्घ संहर्ष छेड़ने की आवश्यकता है उस दृष्टि से हमारा यह कर्तव्य होता है, उनकी पूर्ति हम कैसी करने वाले हैं ? और इस दृष्टि से तानाशाही के विरोध में जो संघर्ष छेड़े जाते हैं उनके स्वरूप क्या हो सकते हैं उनकी Varieties क्या हो सकती हैं, उनकी पद्धतियां क्या हो सकती हैं और ये विविध Varieties पद्धतियां, स्वरूप हैं, उनमे से हमारे लिये उपयुक्त कौन सी हो सकती है, इसका विस्तृत विचार करने की आवश्यकता है ।

मैं यह जानता हूं कि कुछ लोगों की दृष्टि में यह सम्पूर्ण चर्चा आज के सन्दर्भ में शायद असंबद्ध Irrelevant हो । क्योंकि पिछले दिनांक १५ को विरोधी नेताओं की बैठक के पश्चात एक बात हवा में चल पड़ी की एक Dialogue शुरू होने की सम्भावना है और इस कारण आशावादी बने हुए लोग संघर्ष की चर्चा को बेमतलब की बात समझेंगे यह स्वाभाविक है । Dialogue एक अच्छी बात है, हर अन्तर्गत संघर्ष के पश्चात Dialogue होना ही चाहिये, होगा तो अच्छा ही होगा किन्तु उसकी सीमायें समझ लेने की आवश्यकता है । हो सकता है कि Dialogue करने के लिये हम तैयार हैं यह बात विरोधी दलों के नेताओं की ओर से आनी चाहिए । यह इच्छा शायद सरकार की हो या उस तरह के लिये उनकी Planning हो और इसके पश्चात Dialogue करना या नहीं करना यह पूरा उनके ही Discretion पर रहेगा,

यह हो सकता है। She is playing her cards close to her chest तो इसलिये निश्चित रूप से उनका अगला कदम क्या होगा–कहना सम्भव नहीं है। लेकिन कुछ बातें सोचने योग्य हैं। एक, क्या ऐसे कुछ Compelling factors हैं जिनके कारण Prime minister को Negotiations के टेबल पर आना बाध्य हो गया है ? वैसे कुछ Compelling factors शायद Compelling तो नही लेकिन कुछ factors तो पहले भी थे, आज भी हैं, जो बढ़ने वाले हैं। लेकिन इन factors का Compulsive character कितना है ? To what extent they are compelling ? यह आज कहा नहीं जा सकता।

दूसरी बात है कि Dialogue का परिणाम क्या निकलेगा, यह केवल इस पर अवलम्बित नहीं कि Compelling factors की intensity क्या है। इस पर भी अवलम्बित है कि विरोधी दलों के नेताओं की संघर्ष-क्षमता संघर्ष करने की हिम्मत या दम कितना है ? Compelling factors की क्षमता कम हो सकती है, ज्यादा हो सकती है। वैसे ही विरोधी दलों के नेताओं की संघर्ष क्षमता कम हो सकती है, ज्यादा हो सकती है। दोनों बातों पर Dialogue का परिणाम क्या निकलेगा, फलश्रुति क्या निकलेगी–इसी बात पर अवलम्बित है। किन्तु इसके परिणाम स्वरूप क्या प्रतिक्रियायें जनमानस में हो सकती हैं–इसका विचार हम आज कर सकते हैं।

इस विषय में दोनों Versions आ सकते हैं। एक खुद ही Dialogue में से जो कुछ भी निकले आज Stagnation है Deadlock है, इसमे से जैसे तैसे पत्थर के नीचे से हाथ तो थोड़ा सा निकल जाये, बाद में जो होगा वह देखा जायगा। दरवाजा जो एकदम बन्द है वह थोड़ा सा खुल जाय। बाद में उसको और ज्यादा खोलने की कोशिश करेंगे। इस तरह का एक विचार होने के कारण, Impatient होने के कारण, और इसके कारण Dialogue में कुछ भी हुआ तो भी वह अच्छा ही है, क्योंकि पहले बिलकुल कुछ होता ही नहीं था उसके तुलना में कुछ न कुछ तो हो रहा है, यह एक आत्म समाधान भी आ सकता है और इसके कारण किसी भी शर्त पर समझौता हुआ तो भी वह विजय ही है ऐसा कहा जा सकता है, एक Version के अनुसार।

किन्तु समझौता होगा याने क्या होगा ? और इसके कारण आज का

Deadlock आज का Stagnation खत्म हुआ है, ऐसा दिखेगा तो भी दरवाजा खुलने वाला है या बन्द होने वाला है–यह दूरगामी विचार भी करना पड़ेगा। Prime minister जो Powers लिये हुई हैं. Amendments के द्वारा। क्या उन Powers में कटौती करते हुए विरोधियों केसाथ समझौता करने के लिये तैयार होंगी ? क्या परिस्थितियां इतनी Compelling हैं कि आज हाथ में जो Powers आयी है, छोड़ने के लिये वे तैयार हों जायें ? ऐसा लगता नहीं। इसका मतलब तो यह होता है कि Amendments के माध्यम से प्राप्त हुई सभी Powers को अक्षुण्णं रखते हुए Withoutcurbing them उनको कायम रखते हुए विदेशी जनता और सरकारों के समान ही अपनी भी जनता का लोकतन्त्र चल रहा है, इस तरह का नाटक दिखाने में विरोधी दलों के नेताओं का भी सहयोग प्राप्त हो, यह भी एक विचार उनके मन में आने की सम्भावना है, She has numbers of alternatives options

किन्तु यह भी एक विचार उनके मन में आने की सम्भावना है कि यदि वे सद्भाव के कारण हाथ में आयी हुई Powers छोड़ने को तैयार हो जाती है तो Nothing better than that nothing less likely thanthat, किन्तु वह Powers छोड़ने के लिये तैयार नहीं। विरोधी थक जाने के कारण लम्बी देर तक प्रतीक्षा करने के कारण किसी भी कारण से–एक बार किसी प्रकार कुछ किया जाए हाथ निकाला जाये पत्थर के नीचे से, यह सोचने के कारण, और आज की उनकी Powers को कायम रखते हुए at her mercy at herdiscretion, वे जितना ही fre dom देगी-उतना ही freedom लेकर हम सन्तुष्ट रहे, क्योंकि अपना Normal politcal function हम शुरू करेंगे. ऐसा सोच कर–यदि समझौता एक बार कर लेते तो जैसे मैंने कहा, एक Version यहा तक भी है कि चलो, थोड़ा पत्थर के नीचे से हाथ निकला है। थोड़ा दरवाजा खुला है, बाद में देखेंगे, और खोलेंगे।

दूसरी बात आ सकती है-Version हो सकता है, संघर्ष की क्षमता, हिम्मत न रखते हुए किये हुए इस तरह के समझौते के कारण जो Functioning शुरू होगा, उसके फलस्वरूप फिर से जनता में प्रतिकार की इच्क्षा और क्षमता जागृत करना अधिक कठिन होगा। यह भी इसका एक परिणाम हो

सकता है। प्रतिकार करने की जनता की इच्छा या क्षमता पूरी तरह से समाप्त हो जाएगी यह परिणाम इससे निकल सकता है। क्या होगा यह तो Assessment की बात है। किन्तु किसी भी परिस्थिति में संघर्ष का आश्रय, अवलम्बन हमें आगे चलकर करना होगा, यह बात कार्यकर्ताओं के मन में से यदि आज हट जाती है तो, और इसकी तैयारी करने में यदि वे नहीं जुटते तो आज का समझौता भी आगे चलकर जनता के लिये जनतंत्र के लिये एक और जबरदस्त धक्का देने वाला सिद्ध हो सकता है।

जनतन्त्र पहले ही खतम हो चुका है। अब उसको पूरी तरह से जमीन के नीचे गाड़ देने वाला- सिद्ध होने की सम्भावना है। इसलिये Dialogue अच्छी बात है, होना ही चाहिये। उसका अच्छा परिणाम निकलेगा तो वह भी ठीक है। आज बहुत कुशलता के साथ हालांकि संघर्ष की क्षमता के बगैर केवल कुशलता से कितना काम हो सकता है और कितना काम प्रचार करने के लिये है, यह सोचने की बात है। लेकिन बहुत कुशलता के साथ यदि कुछ न कुछ किया जाता है और उससे Normal functioning शुरू हो जाता है, बहुत अच्छी बात है और उसी का आधार लेकर यदि आगे के संघर्ष की तैयारी की जा सकती है तो वह भी बहुत अच्छी बात है। लेकिन किस ढंग से Dialogue की फलश्रुति निकलती है, इस पर ही यह सारा अवलम्बित रहेगा। क्योंकि यह निश्चित रूप से होगा, यह तो कहना कठिन है। लेकिन एक बात निश्चित रूप से हम कह सकते हैं कि उस संघर्ष की तैयारी, संघर्ष के बारे में पूरा विचार यह किसी भी हालत में कार्यकर्ताओं के मन में स्पष्ट रूप से रहना आवश्यक है, अपरिहार्य है। बगैर इसके आगे के परिणाम खराब निकल सकते हैं। देश के लिये, जनतन्त्र के लिये मजदूरों के लिये गरीब जनता के लिये, आपके हमारे सबके लिये और दुष्परिणाम निकल सकते हैं यदि Selfcomplacence आत्म सन्तोष या आत्मवंचन की भावना कार्यकर्त्ताओं के अन्दर आ जाये। इस दृष्टि से यद्यपि मैं यह जानता हूं कि आशावादी कुछ लोग आज के इस विशेष सन्दर्भ की पृष्ठभूमि में आज के संघर्ष की बात करना यह एक Irrelevant talk मानेंगे तो भी कार्यकर्ताओं के सामने यह विचार स्पष्ट रूप से आना आवश्यक है- ऐसा मैं मानता हूं।

अब हम आगे का विचार करेंगे, संघर्ष—एक ऐसा शब्द है, जिसके उच्चारण मात्र से विभिन्न लोगों के मन में विभिन्न कल्पनायें आती हैं। जैसे मुझे कुछ लोगों ने कहा, आप संघर्ष चाहते हैं यानी क्या Total revolution

चाहते हैं ? मैंने कहा, कि देखिये, जिस समय देश का नभोमण्डल Totalrevolution की घोषणा से गूंज रहा था, उस समय भी भारतीय मजदूर संघ ने अमृतसर अधिवेशन में इस लोकप्रिय घोषणा को स्वीकार नहीं किया, इसलिये कि, भारतीय संस्कृति को हम अपना आधार मानते हैं। भारतीय संस्कृति के अन्तर्गत समाज रचना की Foundation नींव 'धर्म" है।

अपरिवर्तनीय सनातन सिद्धान्तों के प्रकाश में परिवर्तनशील समाज रचना, यह धर्म की विशेषता है। इस धर्म के Foundation पर समाज रचना रहे–यह भारतीय संस्कृति का कहना है। Total revolution में न केवल समाज के Super structure का परिवर्तन अभिप्रेत हुआ है वरन् समाज रचना की नींव, Foundation का भी परिवर्तन उसमें अभिप्रेत है। चूंकि हम इस foundation को जो हमारा हमेशा धर्म ही रहा है, बदलना नहीं चाहते, हमने समग्र क्रान्ति की कल्पना को स्वीकार नहीं किया। अब समग्र की बात छोड़िये लेकिन कुछ लोग यह पूछ सकते हैं कि आप संघर्ष चाहते हैं यानी क्या क्रांतिवादी हैं ? तो भारतीय मजदूर संघ के नाते यह बात स्पष्ट है कि Genuine Trade union organisation होने के कारण भारतीय मजदूर संघ क्रान्तिवादी नहीं, संक्रमणशील है।

हम वादी तो किसी के नहीं। हम संक्रमण चाहते हैं। दुनियां का इतिहास हमें यह बताता है कि Genuine Trade unionism और क्रान्ति ये दो बातें साथ साथ नहीं चल सकती। यह बात अलग है कि जहां Trad unionism genuine नहीं है, political है, वहां Political लोगों ने इसका उपयोग अपने स्वार्थ के लिये किया होगा। लेकिन जहां Genuine Tradeunionism है, वहां क्रांति की बात नहीं आती। संक्रमण की बात आती है। और Genuine Trade unionists के नाते हम भी क्रांतिवादी नहीं बन सकते। हम संक्रमणशील हैं। भारतीय मजदूर संघ के नाते यह बात स्पष्ट है।

और भी एक बात है। जहा हम मजदूरों के हितों के लिये सब कुछ करने के लिए तैयार हैं; वहां राष्ट्रहित को हम सर्वोपरि मानते हैं और इस दृष्टि से राष्ट्र के हित के लिए मजदूरों के हितों को छोड़ने का भी प्रसंग आता है तो वैसा भी करने के लिये हम तैयार हो सकते हैं। त्यजेदेकम् कुलस्यार्थे इस न्याय से मजदूर राष्ट्र के लिये सम्पूर्ण त्याग के लिये तैयार हो, उसकी तैयारी

करना-भारतीय मजदूर संघ का Mission है। किन्तु क्या Genuine Trade unionism को हम छोड़ दें और क्रांतिवाद के पीछे लगें तो क्या उससे राष्ट्र का कल्याण होगा? यह बात Thorough analytical thinking क्या कोई हमें समझा सकेगा?

क्रान्ति की कल्पना क्या है? अपने देश में जैसे हर समाज में रोमांटिक लोगों की कमी नहीं। कुछ रोमांटिक लोग जो हमेशा हर समाज में ऐसे रहते हैं जो सोचते हैं कि टी०बी०, बीमारी रोग आदि दुरुस्त नहीं होता या दुरुस्त होने में देर लगती है तो अच्छा है कि खटाक से आपरेशन कर दें। यह भी फिक्र नहीं करते कि वह आपरेशन किसी पार्ट का होगा या उस आदमी का होगा जिसको कुछ हो गया है। और वह खतम हो जायगा इसका विचार न करते हुए केवल आपरेशन की बात Romantically सोचने वाले लोग हर समाज में हैं- होते हैं।

हम यह देखना चाहते हैं कि उनकी कल्पना क्या है? अब जो हिंसा की बात करते हैं वे शायद इतना सोचते भी नहीं कि उसको कितनी Varieties है? किस तरह से वे करना चाहते हैं? उसके परिणाम क्या निकलेंगे? मैं उनसे यह पूछूंगा कि हिंसा से आपका मतलब क्या है? Individual terrorism? हिन्दुस्तान जैसे लम्बे चौड़े देश में क्या Individual terrorism के माध्यम से हमारे उद्देश्य की पूर्ति हो सकती है? जहां हमारी लड़ाई System के खिलाफ है, और यदि किसी व्यक्ति विशेष का नाम लिया भी जाता है तो वह इसलिये नहीं कि वह विशेष व्यक्ति है, अपितु इसलिये कि वह व्यक्ति विशेष उस System को Represent करता है जिस System के खिलाफ हमारी लड़ाई है। तो जहां लड़ाई व्यक्ति के खिलाफ नहीं System के खिलाफ है, क्या वहां Individualterrorism काम कर सकता है? एक बात।

कुछ लोग इधर उधर के उदाहरण पढ़कर और भी हिंसाचार के विभिन्न मार्गों का विचार करते हैं। कहा गया कि सबसे सरल रास्ता है, जिसको कहते हैं Coup उस शब्द का वास्तविक उच्चारण 'क' ऐसा है। किन्तु क्या ये लोग जानते हैं कि पिछले १९४५ से लेकर १९६६ तक विभिन्न ३६ देशों में जो 'क' और attempted coup हुए, जिनकी संख्या ८८ है, इन सबका अध्ययन करते हुए एक श्रेष्ठ विचारक ने ऐसा निष्कर्ष निकाला कि कुछ परिस्थितियों में यह 'क'

सफल हो ही नहीं सकता। और जो तीन परिस्थितियाँ उसने दी है। उनमें से एक परिस्थिति यह है कि जहां देश विस्तृत हो, लम्बा चौड़ा हो और बहुकेन्द्रीय हो, multi-central हो वहां, coup की प्रक्रिया यशस्वी नहीं हो सकती। जहां देश छोटा है और एक-केन्द्रीय है, वहीं coup यशस्वी होता है। यह निष्कर्ष इतने अध्ययन के पश्चात यानी ४५ से ६६ तक ३६ देशों के क' और attempted coup का अध्ययन करते हुए इस श्रेष्ठ विचारक ने निकाला है। क्या वे जानते हैं कि हिंसाचार का जो विचार करते हैं और भी पद्धतियाँ उनके मन में शायद हो Civilwar है, Promantiato है, Putsh है, आजकल जिसको Liberation कहा जाता है, वह है—कई पद्धतियां हैं, कई प्रक्रियायें हैं। विदेशों में इसका कहीं कहीं प्रयोग भी हुआ है। सफलता से—विफलता से। इन सबका एक अनुभव है। जहां इनके Details में कुछ अन्तर है वहा एक Commonexperience के बारे में है। ये जो सारी प्रक्रियायें हैं, वे सेना के आधार पर सेना या सेना के किसी विभाग के Initiative पर, सेना के प्रधानत्व में, और परिणामस्वरूप सेना को प्रधानत्व प्रदान करने वाली, इसी तरह की ये सारी प्रक्रियायें हैं। और इसके कारण इन प्रक्रियाओं के फलस्वरूप यदि Change of regime हो जाता है तो इस सेना की ही Initiative और सेना की ही Domination होने के कारण बदलते हुए Regime में क्या प्रत्यक्ष या अप्रत्यक्ष सेना की Dictatorship नहीं आएगी? इस तरह की कोई भी gurantee इन विभिन्न प्रक्रियाओं में नहीं है। हम सोचते हैं कि Remedy should not be worse than the disease "Fromfrying pan to fire" ऐसी बात नहीं होनी चाहिये और इस दृष्टि से Civilwar promanciato, putsh, liberation आदि जो प्रक्रियायें हैं- वे हमारे लिए उपयुक्त नहीं। एक Dictatorship का Replacement दूसरे Dictatorship से करना नहीं है। यह उपयुक्त नहीं है। ऐसा सभी लोग सोचते हैं। हां, ये बात ठीक है कि हिंसा के मार्ग से हो या अहिंसा के मार्ग से हो, Revolution का विचार लोग कर सकते हैं, Resistance, rebellian, revolt, revolution यह जो एक रास्ता है इसका भी विचार हो सकता है। लेकिन Revolution का यदि विचार हुआ तो फिर यह निश्चय करना पड़ेगा कि वह Revolution अहिंसात्मक रहे या हिंसात्मक रहे। क्योंकि दोनों पद्धति से Revolution हो सकती है। इसके अलावा जो हिंसा के मार्ग हैं उनके बिषय में तो मैंने कहा कि Revolution एक बात ऐसी है कि जो

हिंसात्मक हो सकती है, और अहिंसात्मक भी हो सकती है। क्या हम हिंसात्मक Revolution का विचार कर सकते हैं ?

क्या वह हमारे लिये उपयुक्त होगा ? क्या सशस्त्र क्रांति हमारे लिये उपयुक्त होगी ? वैसे तो आप जानते हैं कि भारतीय मजदूर संघ के संविधान में यह स्पष्ट लिखा है कि हमारा सिद्धान्त है No violence स्वतन्त्र देश में। विदेशी साम्राज्य का मुकाबला करना हो वहां हिंसाचार का विचार, सशस्त्र क्रान्ति का विचार हो सकता है It is one of the alternatives किन्तु जहां देश स्वतन्त्र हो और जहां सरकार स्वदेशी हो वह लोकतांत्रिक रहे, तानाशाही रहे, या और कुछ रहे, लेकिन स्वदेशी सरकार रहे—वहां किसी भी हालत में हिंसा का विचार नहीं होना चाहिये। यह हमारी मान्यता है। तो भी जो सशस्त्र क्रान्ति की बात करते हैं—मैं उनसे पूछना चाहता हूं कि क्या उन्होंने कभी अपने ही मार्ग के विषय में पूरा विचार किया हुआ है ? आखिर "क्रान्ति" यह क्या बात है ? क्या Phenomenon है ? उसका स्वरूप क्या है ? और सशस्त्र क्रान्ति के परिणामस्वरूप वे क्या प्राप्त करना चाहते हैं ? क्या वे जानते हैं कि, एक सिद्धान्त है जो व्यवहार में अनुभव के आधार पर रखा है "Where a govt. has come into power through some form of popular vote, fraudulent or not and maintains atleast an appearance of constitutional legalities, the guerilla outbreak cannot he promoted since the Possibilities of peaceful struggle havenot been exausted" क्या उन्होंने इस पर विचार किया है ? क्या वे जानते हैं कि सशस्त्र क्रान्ति का गोरिला वारफेयर का (Gurilla warfare) विचार हर देश में नहीं हो सकता। उसके लिये कुछ भौगोलिक Pre-requisites है। जैसे एक authority Guerilla warfare के प्रारम्भ के लिये किस तरह का प्रदेश चाहिये वे कहते हैं—

"Aregion that is more rural than urban, mountaineous rather than plains, thickly forested rather than with extensive railway lines and roads, and preponderentally agricultural rather than industrial, is eminently suited for guerilla activities"

और जहां तक हिन्दुस्तान का सम्बन्ध है वहां, ये ठीक है कि Guerilla warfare का प्रारम्भ कहां हो तय करना Geographical और Demograph structure के आधार पर Experts का काम हो सकता है। वहां यह निश्चित है कि हमारे देश के जो बड़े बड़े मैदान हैं, वे उसके लिये उपयुक्त नहीं। देश का आधे से अधिक हिस्सा इसके लिये उपयुक्त नहीं और जो उपयुक्त प्रदेश है एक दूसरे से सटे हुए Contagious नहीं। और खास कर अपने देश का जो Administrative centre है वह दोनों के बीच में है. क्योंकि जैसे एक ने कहा है कि यदि देश का Administrative centre पहाड़ों से घिरा हुआ रहता तो १७६१ के आक्रमण को पानीपत में पहुंचने से पहले ही परास्त किया गया होता। जैसे वार में वैसे Revolution में Terrain का बहुत महत्व हुआ करता है। क्या वे इस बात से परिचित हैं कि कालों Carlosmarighella की जो urban guerilla warfare की टैक्निक है, वह हिन्दुस्तान जैसे देश में काम नहीं दे सकती ? लेकिन अमेरीकन देश जहां ५० प्रतिशत या उससे अधिक जनसंख्या केवल तीन या चार बड़े शहरों में केन्द्रित हो या युरुग्वे या चिली के समान देश की एक तिहाई Population एक शहर में बसी हो. वहां तो Marighella urban guerilla warfare का technique काम कर सकता है। हिन्दुस्तान जैसे देश में यह काम नहीं कर सकता। क्या वे जानते हैं कि पिछले महायुद्ध के पश्चात जहां जहां क्रान्ति का प्रयास हुआ, वहां वहां का अध्ययन करते हुए एक Authority ने यह निष्कर्ष निकाला कि " It can be concluded that no guerilla comp-aign in recent years has ultimately prevailed without large scale infusion of outside aid and arms" और जहां International propaganda का महत्व तो राष्ट्रवादी भी स्वीकार कर सकते हैं. इतनी मात्रा तक जितनी मात्रा तक सरकार स्वीकार कर रही है, वहां कौन सी राष्ट्रवादी शक्ति है जो इसमें सफलता प्राप्त होने के लिये Outside country की help लेने का विचार करेगी ? बगैर जिसके इस तरह का प्रयास सफल नहीं हो सकता ? यह इन सब प्रयासों के इतिहास के अध्ययन के आधार पर जानकर अधिकारी लेखक ने कहा हुआ है। क्या ये रोमांटिक लोग यह बात जानते हैं कि जब तक जन साधारण का समर्थन इस प्रयास को प्राप्त नहीं होता तब तक केवल शस्त्र के सहारे क्रान्ति यशस्वी नहीं होती ? हाल ही में लगभग ५० देशों में अर्बन (Urban) या Rural guerilla warfare

में जुटे हुए ८० संगठनों का सर्वे करने के पश्चात् सर्वे करने वाले अध्ययन करने वाले लोगों ने यह निष्कर्ष निकाला है कि "A Careful study of a recent survey of over 80 organisations, indulging in some kindof violence of guerilla nature urban or rural in nearly 50 countnies will prove conclusively that both arms and popular support are essential for the success of a violent revolution, but the latter is more decisive than the former" ? क्या इन सब बातों का विचार हिंसा का सुझाव देने वाले लोगों ने किया है ?

जहां तक भारतीय मजदूर संघ का सवाल है हम तो इससे भी अधिक Basic बात पर जाना चाहते हैं। Basic बात है, क्रान्ति यह phenomenon क्या है ? उसके Components क्या ? हम जानते हैं इसके दो Components हुआ करते हैं । एक विध्वंसात्क, विध्वंस विद्यमान रचना का, दूसरा रचनात्मक, रचना नए समाज की । याने विध्वंसात्मक और रचनात्मक, दो तरह के Components हुआ करते हैं । और यह तो एक मानी हुई बात है कि साधारण रूप से विध्वंसात्मक Components पूरा करने के लिये इन गुणों की आवश्यकता हुआ करती है। वे रचनात्मक कार्य के लिये अनुपयुक्त या कभी कभी बाधा के रूप में भी उपस्थित हो सकते हैं। और रचनात्मक कार्य के लिए जिन गुणों की आवश्यकता हुआ करती है, वे विध्वंस के कार्य में अनुपयुक्त या बाधा के रूप में भी उपस्थित हो सकते हैं। याने दो apparantly self contradictory ऐसे कार्य क्रान्ति की कल्पना में अनुपयुक्त हैं और यही कारण है कि पश्चिमी देशों का पिछले कुछ शताब्दियों का क्रान्तियों का इतिहास आप बारीकी से पढ़ेंगे तो एक आश्चर्यजनक सत्य आपके ख्याल में आएगा कि 'लोकतन्त्र" जनता आदि का नाम लेकर जिन्होंने क्रान्ति प्रयास का प्रारम्भ किया. हम उनके Motivation के बारे में कुछ बोल नहीं रहे. वे श्रेष्ठ पुरुष रहे होंगे किन्तु अच्छा Motivation रखते हुए भी क्यों न हों, जन' और 'जनतन्त्र' के नाम से जिन्होंने अपने अपने देश में क्रान्ति प्रयासों का प्रारम्भ किया, क्रान्ति पूरी सफल होने के पश्चात जिनमें से एक भी क्रान्तिकारी नेता अपने देश में लोकतन्त्र की स्थापना नहीं कर सका। Inevitably without exception इस तरह के

हर एक क्रान्ति प्रयास की सफलता के पश्चात् लोकतन्त्र नहीं तो तानाशाही का ही निर्माण क्रान्ति-उत्तर काल में, इस तरह हर एक देश में हुआ। यह केवल Coincidenced की बात नहीं है। यह इसी का परिणाम है कि सर्वसाधारण राजनैतिक नेता विध्वंसात्मक कार्य और रचनात्मक कार्य, दोनों का समन्वय नहीं बिठा सकते। प्रथम कार्य विध्वंसात्मक होने के कारण उसके लिये आवश्यक वह सारी भौतिक तैयारियां और मानसिक गुण समुच्चय इसी की हिफाजत की जाती है जो आगे चलकर Stabilising force बनाने में बाधा के रूप में आती है। क्रान्ति-उत्तर निर्माण यह Stabilising force वाली बात है, Durability वाली बात है। उस Durable institution का निर्माण होना चाहिये। किन्तु इस तरह का Durable institution का निर्माण करने के लिए जो गुण चाहिये वे विध्वंसात्मक कार्य के लिये आवश्यक गुणों से एकदम भिन्न है, और जिसके कारण दोनों का मेल सर्वसाधारण राजनैतिक नेता नहीं बिठा पाये, यह हमारे ख्याल में आता है। एक महान क्रान्तिकारी, क्रांतोत्तर युगोस्लाविया के कुछ वर्ष तक Deputy prime minister रहे जिन्होंने अपने "The new class" में यह स्पष्ट रूप से कहा "The Society that has arisen as the result of some sorts of self contradiction as are other societies the result is that the communist society has not only failed to develop towards human brotherhood & equality but that out of its party beaurocracy there arisen previleged social structure, which in accordance with marxist thinking— I name a "new class" उसके पश्चात कई वर्षों के mature thinking के फलस्वरूप लिखते हुए अपने "The unperfect society" इस किताब में वे निष्कर्ष के रूप में जो कुछ बातें लिखते हैं उनमें से यह एक बात Communism once a populer movement that had in the name of science inspired the toiling and oppressed people of the world with the hope of creating the kingdom of Heaven on earth, that launched and contineous to launch millions to their death in persuit of the unextinguishable universal dream, has become transformed in to national political bearocracies squabbling among

themselves for prestigue & influence, for resources and for markets for all those things over which politicians & govts have always quarrelled andaiways will, the communists were compelled by their own ideas and by the realities in their societies, first to seize power that delight above all deligats and then to struggle among themselves. This has been the fate of all revolutionary movements in history."

यह ध्यान में रखने योग्य है कि केवल कम्युनिष्ट Countries में ही नहीं तो गैर कम्युनिष्ट पश्चिमी देशों में भी पिछले कुछ शताब्दियों में जब भी सशस्त्र क्रान्तियां हुई हैं इस सब का परिणाम ऐसा ही निकला है।

और यह केवल Coincidence की बात नहीं। क्रान्ति के जो दो Components हैं उनका बराबर समन्वय करने की क्षमता केवल विशुद्ध राजनैतिक नेताओं में नहीं हो सकती। कारण यह बात हुई। हमारे देश में यह समन्वय हो सका। Politically dis-interested धर्म प्रवण, धर्म की प्रतिष्ठापना करने वाले लोगों के द्वारा यह समन्वय हो सका। लेकिन इन लोगों की एक ऊंची श्रेणी है। जो सर्वसाधारण राजनैतिक नेताओं की तुलना में नहीं हो सकती। यह तो बात ठीक है कि भगवत्गीता को हम शास्त्र निहित और Authentic revolution की Saffron Book ऐसा कह सकते हैं। किन्तु साथ ही साथ हम यह भूल नही सकते कि वहां सशस्त्र क्रान्ति का उपदेश करने वाले स्वयं Politically dis-interested में या Politically ambitious नहीं थे, तो शासन का धर्म स्थापना के लिये उपयोग हो इतना ही एक उद्देश्य उनके सामने था।

हमारे यहां सशस्त्र क्रान्तियां भी हुई हैं। अगस्त्य से लेकर नेता जी सुभाषचन्द्र तक उदाहरण हम देखें, जितनी ही क्रान्तियां हुई हैं, हमने यह देखा है कि जहां को लेकर क्रान्ति का प्रारम्भ होता है वहां बाद में गड़बड़ियां होती हैं। लेकिन जहां ऋषि मुनियों के समान केवल धर्म प्रवण, धर्म के प्रतिस्थापना की चिन्ता करने वाले लोग शासक को धर्म का एक साधन समझते हुए सशस्त्र क्रांति का प्रत्यक्ष नेतृत्व करते हैं। वहां गड़बड़ियां नहीं होतीं। यहां फिर यह जो

हिंसात्मक और रचनात्मक दो Components हैं उनका समन्वय बराबर हो सकता है। यह बात इतिहास हमें बताता है।

इस तरह के ऋषि मुनि हमारे देश में हुए। कुछ जंगल में जाकर हुए। कुछ शासन में आकर भी हुए हैं। स्वपराक्रमार्जित राज्य स्वयं प्रेरणा से छोड़ने के लिये तीन बार तैयार हुए, शिवा जी को हम ऋषि मुनियों में गिनती करते हैं। हमारे देश में भी ऐसे ऋषि मुनि हुए हैं जैसे विदेश में हुए हैं। साक्रेटीस, जिससे क्राइस्ट, जोसेफ मझिनी, अब्राहम लिंकन, थोरो, टालस्टाय कई ऐसे ऋषि मुनि हैं, जिसके अन्दर इस तरह की नैतिक नेतृत्व की हिम्ममत थी जो नेतृत्व हिंसात्मक और रचनात्मक का समन्वय अपनी क्षमता से कर सकता था।

इस तरह के ऋषि मुनि आप में और हम में, हमारे देश में, दिवंगत भारतीयों में जैसे आपने और हमने देखे हैं– गांधी जी, और गुरू जी विद्यमान भारतीयों में हम जानते हैं कि ऋषि मुनि की मात्रा सबसे अधिक श्री जयप्रकाश नारायण में है। यह बात हम सब कोई जानते हैं। इस तरह का नैतिक नेतृत्व न रहा तो Political creatures के हाथों सशस्त्र क्रान्ति की बात माने के कारण गड़बड़ी हो सकती है, जिसका अच्छा विवरण है डा॰ Geoffray Fairbairh ने revolutionary Guerilla warfare इस किताब में किया है, वे कहते हैं आप यह समझ लीजिये उन्होंने भी कहा है कि युद्ध और क्रान्ति इन दोनों में हिंसा, Violence एक Common denominator है। यह ख्याल में रखते हुए डा॰ Pairfairh ने अपनी किताब में कहते हैं, One of the casualties of modern war fare is a loss of that deeper understanding of the human condition which was stated perhaps two millerla ago in the Bhagawad gita i. c. a man has a night to act but not to expect the fruits of his action".

यह सारी बात ख्याल में रखते हुए ऋषि मुनियों का श्रेष्ठ, प्रत्यक्ष नेतृत्व प्राप्त हुआ तो क्या करना यह अलग ढंग से सोचा जा सकता है। इसका भी Success ful experiment हमारे देश में हुआ है। फिर वह ऋषि मुनि चलाने वाले हों या शासन को छोड़ कर जंगल में जाने वाले हों। इसमें फरक नहीं पड़ता। जहां इस तरह का नैतिक नेतृत्व न रहा तो सशस्त्र क्रान्ति का

विचार किसी भी परिस्थिति में करना कहां तक उचित होगा ? Remedy worse than the discase नहीं होगी, यह भी सोचने की बात है।

जैसे हमने कहा, भारतीय मजदूर संघ ने सिद्धान्त के रूप में इस बात को मान्यता दी है कि स्वतन्त्र देश में जहां स्वदेशी सरकार हो, चाहे लोकतांत्रिक हो या तानाशाही वहां हिंसा का किसी भी हालत में स्वीकार करना ही नही चाहिये। हिंसा को इस देश में कोई भी स्थान नहीं है। और यदि हम हिंसा को स्वीकार करेंगे तो वह Self defeating होगा। जिन बातों को प्राप्त करने के लिये हम हिंसा का उपयोग कर रहे हैं वेभी बातें नष्ट करना यह इसका परिणाम होगा। भारतीय संस्कृति पर आधारित,हम इस बात का कभी समर्थन नहीं कर सकते कि the ends justify the means साधन सुचिता यह हमारी संस्कृति की विशेषता रही। साधन सुचिता का अभाव Self defeating हो सकता है। इस दृष्टि से, to repeat विदेशी आक्रमण और विदेशी साम्राज्यों के खिलाफ जहां सशस्त्र प्रतिकार का विचार किया जा सकता है, वही स्वदेशी सरकार स्वतन्त्र देश में है। वहां हिंसा का विचार होना नहीं चाहिये। यह बात हमने सिद्धान्त के रूप में मानी है। इस पर और विचार करने की आवश्यकता नहीं है। अब हम अगला विचार करें।

जैसे कि हम अहिंसात्मक मार्ग की बात करते हैं, मैं जानता हूं कि इस क्षेत्र में निराशा की कोई बात नहीं। इस मार्ग से गन्तव्य कहां तक प्राप्त होगा क्या Change of regime के लिए यह पर्याप्त, adequate हो सकता है ? यह आशंका मन में आती है। किन्तु लगता है, इसका एक कारण यह है कि Change regime का mechanism क्या है ? उस प्रक्रिया में अन्तिम तथा निर्णायक factor क्या हैं ? उसकी जानकारी (आशका लेने वाले), उन्हें नहीं है। शायद वे सोचते हैं कि हो हल्ले के फलस्वरूप Change हो सकता है। अन्तिम और निर्णायक शस्त्र हैं, किसी भी Regime के Self contradictions का परिपक्व हो जाना।

हर एक Regime चाहे, वह democratic रहे या dictatorial रहे, कुछ inherent self contradictions हुआ करती है, किन्तु लोकतन्त्र के अन्तर्गत इन Self contradictions को deal करने के रास्ते उपलब्ध हुआ करते हैं। एक तरह यह कि यदि रूलिंग पार्टी के नजदीक आने वाले कोई एक

विरोधी दल या पार्टियों का समूह हो, तो Change of ruling party यह मार्ग हो सकता है। दूसरा मार्ग हो सकता है, कि यदि Ruling party बहुत बड़ी हो, विरोधी दल कमजोर हो, वैसे भी बहुत छोटे हो, तो फिर change in the leader ship of the ruling party यह दूसरा मार्ग हो सकता है। इसके द्वारा एक Outlet मिल जाता है। या तो change of the ruling party या change in the leadergbip of the ruling party दो में से कोई भी एक रास्ता लेने से Self contradictions can be contained ard managed। जिसके अन्तर्गत इस तरह की कोई गुन्जाइश नहीं, वहां इस तरह का change हो ही नहीं सकता। और इसके कारण या तो dictatorship कायम रहे या Collapse हो जाये टूट जाए अपनी Inherent self Contradictions की परिपक्वता के बोझ के नीचे। ये दो ही रास्ते बच जाते हैं।

वास्तव में Inherent self Contradictions दो तरह के खासकर हुआ करते हैं। Political भी होते हैं, Economic भी होते हैं, किन्तु ज्यादा प्रभावी Economic होते हैं। जिनके कारण इसका असर Political self Contradictions पर होता है।

तरह तरह की बातें, जब मैं Self Contradictions कर रहा हूं, आपके सामने आ सकती हैं। Intra party rivalry, Intra Political dissensions, Progressively increasing strain on the exchaquer, on the tax-payers कीमतों का बढ़ना, ग्रोथ रेट घटना, बेरोजगारी बढ़ना, Balance of payment की पोजीशन Position बिगड़ना, Law and order की Situation खराब हो जाना, Administraive breakdown जनता का बढ़ता हुआ indifference, disquiet और disaffection armed Forces को यदि Subversion नहीं तो कम से कम Neutrali Sation और जो शासन चल रहा है उसका Credit worthiness अन्तर्राष्ट्रीय जगत में खतम हो जाना मानो इनको दिया हुआ Plane ये वापिस कर सकेंगे या नहीं, इनके साथ किये हुए contracts का पालन ये कर सकेंगे या नहीं, इसका सन्देह अतर्राष्ट्रीय क्षेत्र में पैदा होना ऐसे कई factors हैं जो inherent self Contradictions के अन्तर्गत आते हैं।

किन्तु इन सबको mature होने में देर लगती है हिंसाचारियों का gurellawarfare हो या अहिंसावादियों का सत्याग्रह हो gurellawar-fare या सत्याग्रह के माध्यम से Regime नीचे लाया जाता है, यह सोचना गलत है। इनका Purpose इतना ही-सत्याग्रह हो या gurella warfare कि Inherent Self Contradictions परिपक्व बनाने की प्रक्रिया accellerate करना। यह कार्य सत्याग्रह या gurella warfare के द्वारा होता है, जैसे सशस्त्र क्रान्ति के एक नेता ने कहा, Time is required not alone for political mobiIisation but to allow inherent weaunesses of the enemy to develop under the stress of revolution.

मतलब यह है कि दोनों मार्ग से यह परिपक्वता जबतक नहीं आती तब तक दोनों मार्ग के अवलम्बन करने वालों को प्रतीक्षा करनी होगी। Time यह एक बहुत बड़ा factor है। इसमें shortcut हो ही नहीं सकता। सिर्फ accellerate किया जा सकता है।

जहां तक अपने देश का सम्बन्ध है हमारे यहां Self Contradictions कई कारणों से बढ़ सकती है। वैसे तो हम देखते हैं, कुछ Political contra-dictions अपना सर ऊपर कर रही हैं। Ruling Party के अन्तर्गत dissensions है। आज कोई भी, यह बात सही है सीधे Prime Minister के खिलाफ बोलता नहीं है। अपने अपने C. M के खिलाफ बोल रहे हैं। लेकिन स्पष्ट है, groups और Self groups सत्तारूढ़ दल में निर्माण हो रहे हैं। ये सारे इस आशा से उनको चिपक रहे हैं कि आखिर जहां विभिन्न groups में से एक को चुनने का अवसर आयेगा उस समय शायद हमें चुन लें और लोगों को हवा में छोड़ दें।

यह काफी लम्बी देर तक चल रहा है। इसलिए कि चुनाव आया नहीं। चुनाव एक ऐसा अवसर है कि जिस समय P M. को अपना चयन करना होगा, किस Conflicting group को own करती हैं किस group को, dis-own करती हैं। क्योंकि चुनाव के अलावा भी यद्यपि यह बात सही है अलग अलग Fishes & loaves हैं तो भी fishes & loaves की संख्या सीमित है और aspirants की संख्या बहुत ज्यादा है। जिसके कारण चयन करना पड़ेगा। और वह अवसर चुनाव के समय ही आता है।

मेरा व्यक्तिगत अभिप्राय यह है कि यदि इन दिनों में चुनाव के विषय में कुछ अरुचि P. M. दिखाती हैं, तो उसका कारण यह नहीं है कि She wants to consolidate the gains of emergency या यह भी नहीं है कि majority विरोधी दलों को मिल जायेगी। यह उनके मन में भय है। मैं यह समझता हूं कि सबसे बड़ा भय यह है कि वह जानती हैं कि owning, disowning करना पड़ेगा। और यह जो सभी लोग उनको चिपक कर चल रहे हैं यह दृष्य भंग हो जायेगा।

इस तरह Disintegration की Process शुरू हो जायेगी, यह जो एक Political Self Contradictions का process है, वह चुनाव के समय निर्माण हो सकती है। ज्यादा accellerate हो सकती है।

किन्तु चुनाव हो या न हो, क्योंकि चुनाव होगा या नहीं, इसके बारे में ज्योतिषी भी नहीं कह सकता। लेकिन हो या न हो यह Political dissensions, rivalry बढ़ने वाली है और यद्यपि केवल आज Chief Minister के खिलाफ आवाज उठाई जाती है तो भी कल Prime Minister के भी खिलाफ विशेष रूप से संजय गांधी के encroachment के कारण आवाज उठाने का साहस उनके अन्दर आ सकता है यदि Objective circumstances बाहर की परिस्थितियां उसके लिये परिपक्व हुई हों खास कर आर्थिक परिस्थितियां।

आर्थिक परिस्थितियों के विषय में राजनैतिक ढंग से विचार करने वाले इनका महत्व शायद ज्यादा समझते नहीं किन्तु वह बहुत है। हमारे यहां दो Factors हैं जिनका बहुत प्रभाव होता है। एक है Mansoon किसी एक वर्ष मानसून खराब होता है तो उसका असर Self Contradictions बढ़ने में होता है। लगातार दो तीन साल मानसून खराब रहा तो Self contradiction, out of control हो जाती है—होने की बहुत बड़ी सम्भावना रहती है। और उस परिस्थिति में, परिस्थिति को Manage करने का एक ही Saving device बचता है। वह है Foreign aid Mansoon और Foreign aid इसका हमारे देश में बहुत महत्व है। मैं तो यह कहूंगा कि रशिया के इतिहास में जिस तरह कुछ अन्य कारणों से शीतकाल का—Winter का, महत्व प्राप्त हुआ Marshal winter कहा गया, हमारे देश के इतिहास में

आगे चलकर मानसून को यही महत्व प्राप्त होने वाला है, इसको Marshal Monsoon। कहा जायेगा ऐसा मुझे लगता है।

अब Saving device के नाते जो Foreign aid है यह Without string आती नही। शायद कई लोगों को उसका पता नहीं, Family Planning का कार्यक्रम इतना intensivaly इन्दिरा गांधी क्यों ले रही हैं। इंदिरा जी का आसन कायम रखने के लिये Family planning के कार्यक्रमों की कोई आवश्यकता नहीं। It is not an imperative.

वह इस लिए किया जा रहा है कि World Bank और American capital ने Loan और aid के लिये वह एक शर्त इस नाते रखी है।

प्रमुख रूप से दो बातें रखी गयी, Family Planning और export Promotions Export Promotion के implications एकदम ख्याल में आते नहीं। बहुत Implications है। आज हमारे Economy की क्या हालत है ? मैं आपको विश्वासपूर्वक बता सकता हूं, यह कोई भी नहीं जानता। जो Statistics आ रहे हैं वह या तो अधूरे हैं, या गलत हैं। और Production बढ़ रही है ऐसा Claim किया गय, वह सही है ऐसा मान लिया तो भी यदि export की Policy हमारे राष्ट्र हित को ख्याल में न रखते हुए तय की गयी और World Bank और American Capital के pressure के कारण हमारे अत्यावश्यक, जीवनावश्यक वस्तुओं का export करने का, export promotion करने का यदि इन लोगों ने मान लिया तो यहां Production बढ़ने के बावजूद अभाव Scarcities बढ़ेगी, shortages बढ़ेंगे, Consumers goods के जीवनावश्यक वस्तुओं के अभाव के कारण उनकी कीमतें बढ़ेंगी और लोगों की Purchasing Capocity कम होती जायेगी और जीवनावश्यक वस्तुओं का एक तो Searcitiesor shortages होगी और जो रहेंगी॰ उनको खरीदने की ताकत Commonman में नहीं रहेगी। Export promotion की पालिसी यदि हमने राष्ट्र हित का विचार न करते हुए विदेशियों के, विदेशी Capital के pressure से निश्चित की तो ये सारी बातें हो सकती हैं।

उसके कारण मानसून विपरीत जाने के पश्चात केवल Foreignaid की सहायता से कितने साल तक देश को चलाया जा सकता है ? यह प्रश्न

विवादस्पद हैं। चाहे जितने साल चलाया जा सकता यह कहा नहीं जा सकता। और फिर इसमें और भी कई अन्तर्गत बातें जो economy पर असर करने वाली हैं theyalso come into play तो ये चीज मैं आपको बताना चाहता हूं। Govt का statistcs कुछ भी सही-गलत बताये, किन्तु मैं यह विश्वास पूर्वक आपको बताना चाहता हूं कि आने वाले मार्च महीने के पश्चात जीवनावश्यक वस्तुओं की कीमतें लगातार बढ़ती जायेंगी। यह वृद्धि निरन्तर चलती रहेगी। बहुत समय तक। और इसका बहुत बड़ा प्रभाव हमारे कुल economy पर पड़ने वाला है। यह मैं निश्चय पूर्वक कह सकता हूं।

तो इस तरह से जहां economic Self Contradictions mature होने लगती है वहां Politica Self Contradictions अधिक बढ़ जाती है। यहां Dissenting groups है, उनकी भी आवाज उठाने की हिम्मत बढ़ जाती हैं। जब तक economic factors mature नहीं होते तब तक Political discussions आपको Open में, खुले मैदान में आये हुए दिखायी नहीं देंगे।

दोनों एक दूसरे के ऊपर और खास करके economic पालिटिकल के ऊपर असर करता रहता है। इस तरह से जो प्रक्रिया चल रही, चलती ही है, और जैसे मैंने कहा कि डेमोक्रेसी के अन्तर्गत कुछ Mechanism होता है, change in ruling party या change in leadership of the ruling party वह Mechanism, dictatorship के अन्तर्गत न होने के कारण जिस क्षण में Self Contradictions, ripen हो जाती है, परिपक्व हो जाती हैं। उस समय वही एक अन्तिम और निर्णायक कारण है। जिसके फलस्वरूप Regime बदलती है।

अब क्या, हम यह बात जानते हैं, और वह लोग जानते नहीं ? ऐसा नहीं। वे जानते हैं। हरेक तानाशाही को इस बात का मुकाबला करना पड़ा। लेकिन मुकाबला करने का ढंग अलग अलग रहा। तानाशाही Idealogical भी हो सकती है, तानाशाही Personal भी हो सकती है। जहां Idealogical तानाशाही है वहां उस तरह के Self Contradictions को सन्तुलित और Manage करने के लिए एक बहुत बड़ा साधन यानी सत्तारूढ़ दल के पास देश में विस्तृत फैला हुआ Cadre आदर्शवादी कार्यकर्ताओं का समूह उसके परिश्रम से वे निश्चित रूप से बहुत लम्बी देर तक इस तरह के Contradictions को mature होने से या जनता पर उसका प्रभाव होने देने से बचा सकता है।

यही बात चाहे Communist Russia हो या Anti Communist Germany दोनों में हम लोगों ने देखी है।

किन्तु हमारे देश में जो डिक्टेटरशिप है वह Ideological नहीं, यूथ कांग्रेस के नाम से जो हो-हल्ला चलता है उसका Cadre नहीं कहा जा सकता। वह भी तो अवसरवादी, सुविधावादी, Opportunist लोगों का एक जमघट है। और वे वो रोल प्लेनहीं कर सकते जो लेनिन के कम्युनिस्ट Fede rations या हिटलर के नाजी Cadres ने किया। इसके कारण आदर्शवादी Cadres के सहारे कार्यकर्त्ताओं के समूह के सहारे Self Contradictions को Manage करने की जो बात है वह बात हमारे देश में हो नहीं सकती।

मैं समझता हूं कि यह भी चीज P. M जानती हैं। अब इस अवस्था में उनके लिए एक ही मार्ग बचता है। Self Contradictions को Manage करने का। और वह रास्ता यही है कि जब तक वह क्षण आता है Self Contradictions परिपक्व बनने का, वह क्षण आने के पूर्व ही देश में वह परिस्थिति निर्माणकरना कि जनता कितनी भी असन्तुष्ट हो, किन्तु उसके सामने Alternative Relying ground के नाते, alternative centre के नाते कोई भी व्यक्ति या व्यक्ति समूह रहने ही नहीं देता देना। यानी फिर असंतोष कितना ही बढ़ता हुआ रहे, हर एक व्यक्ति अपने को अकेला महसूस करेगा। कोई भी Relying ground या alternative centre नहीं रहेगा। और उस परिस्थिति में तानाशाही को चलाया जा सकता है।

छोटा सा उदाहरण मैं बताना चाहता हूं alternative Centre न होने से क्या परिणाम होता है। बंगाल का temperament हम जानते हैं। छोटी छोटी बात पर वहां शस्त्र निकलते हैं। लेकिन 1943 में जब वहां अकाल पड़ा, ब्रो ३० लाख लोग रास्ते पर आये, रास्ते पर मरे, किन्तु क्योंकि उनके सामने नेताजी सुभाषचन्द्र बोस के जैसा कोई भी alternative नेतृत्व नहीं था। नेतृत्वहीन जनता थी they could not raise their little finger हम कल्पना करें कि यह नेता जी उस समय बंगाल में उपस्थित होते तो किस तरह का विद्रोह बंगाल का temperament ख्याल में रखते हुए होता इसकी कल्पना हम कर सकते हैं।

अब जो गेम रहने वाला है वो गेम यही है कि इस तरह का alternative

centre न रहे। और हम दोनों का भी यह निश्चय होना चाहिये कि यह alternativ centre alternative relying ground हम किसी भी हालत में intact रखेंगे। जिन्दा रखेंगे–उसको बलवान बनायेंगें और जिस तरह से इनका जो यही गेम है उसको हम frustrate करेंगें यह हमारा भी निश्चय होना चाहिये।

इन सब बातों का यही हम विचार करते हैं तो यह देखते हुए कि निर्णायक और अन्तिम लक्ष्य change of regime की प्रक्रिया है–शस्त्र रहना या न रहना यह नहीं। तो Ripening of the inherent salf centradictions of the regime है, और यह देखते हुए कि आज की regime में Self contradictions है, हम देख रहे हैं कि ये ripen होने जा रही है और आज भी कठिनाइयां हैं जो हमसे आज छिपाई जाती हैं वे कठिनाइयां कल बढ़ने वाली हैं, तो फिर अहिंसात्मक मार्ग से ही हम किस तरह इस प्रक्रिया को accellerate कर सकते हैं। इसका शांत चित्त से हम विचार कर सकते हैं। यह महत्वपूर्ण बात हम ख्याल में रखें।

प्रारम्भ में कहा गया ४४ amendment पास होने के पश्चात जो qualitative chang परिस्थिति में आया है इसके कारण अब जो भी आन्दोलन होगा उसका उद्देश्य Derecognition of the govt bythe people यही होना चाहिये। Nothing short of derecognition ऐसा कहा गया जिसका मतलब समझ लेने की आवश्यकता है। वरना अहिंसात्मक मार्ग की Modus operandi होगी यह समझना कठिन हो जाएगा। De-recognition का मतलब क्या है? कम से कम भा० म० संघ के कार्यकर्ताओं को इस Phrase में नवीनता नहीं है। आपको स्मरण होगा कि भा० म० संघ ने एमरजेन्सी के थोड़े ही महीने पूर्व भारत सरकार को यह कहा था कि हम अपने लिये आपकी रेकग्नीशन (Recognition) सरकार की Recognition मांग रहे, यह बात सही है। हमें यह भी प्रतीत हो रहा कि Partitionship के कारण मान्यता की योग्यता रखते हैं तो भी आप भारतीय मजदूर संघ की मान्यता नहीं दे रहे हैं। जानबूझ कर यह Partitionship आपकी हम समझ रहे। अब तक हमने आपके पास मान्यता की मांग की किन्तु अब हम आपके पास मान्यता की मांग करने वाले नहीं। हमने यह तय किया है कि हम भारतीय मजदूर संघ की शक्ति इतनी बढ़ायेंगे कि उस अवस्था में सरकार,

सरकार के नाते, भारतीय मजदूर संघ को मान्यता देती है या नहीं देती यह irrelevant प्रश्न हो जायेगा। Reelevant प्रश्न यह होगा कि भारतीय मजदूर संघ आपको सरकार को मान्यता देता है या नहीं। और अपने शक्ति के कारण ये अवस्था निर्माण हो, कि यदि भा० म० संघ सरकार को सरकार के नाते मान्यता नहीं देता तो सरकार को सरकार के नाते function करना असम्भव हो जाये। इतनी शक्ति हम बढ़ायें, यह बात भारतीय मजदूर संघ ने emergency के पूर्व कुछ महीने कही थी।

इस सन्दर्भ के कारण derecognition यह शब्द आपको अपरिचित नहीं है। किन्तु जीवन के हर क्षेत्र में जो इसके अलग अलग implications होते हैं वे सारे workout करने की आवश्यकता है। explain करने की आवश्यकता है। बरना यदि हम चीज क्या है यह समझते नहीं तो उस दिशा में मार्गक्रमण कैसे कर सकेगें ?

हम सरकार को recognise न करें व्यक्तिगत स्तर पर recognise न करें, समूहगत स्तर पर recognise न करें। और इसके पीछे सिद्धान्त यह है कि No one can be governed against his own will हम कहते हैं कि शासन शासन चला रहा है। मतलब क्या ? बो govern कर रहे हैं और उनके द्वारा में govern हो रहा हूं।

दोनों बातें बो govern कर रहे हैं और मैं governed हो रहा हूं। खुशी से या शक्ति से हो भय के कारण हो, प्रेम के कारण हो, लेकिन I allow myself to be governed इस परिस्थिति की कल्पना करें कि I will not allow myself to be governed by you हो सकता है तुम्हारे पास भौतिक सत्ता है। मैं तुम्हारे द्वारा governed किये जाने से इन्कार कर रहा हूं। इसलिये तुम मुझे दंड भी दे सकते हो। दंड भुगतने के लिये तैयार हूं। लेकिन शासन के नाते मैं तुम्हें मान्यता नहीं दे सकता हूं। यह भूमिका लेने की हिम्मत एक एक व्यक्ति में आ जाये इतना जन जागरण इतनी जनशिक्षा इसके लिए आवश्यक है। उतने आत्मबल की जागृति व्यक्तिगत स्तर पर समूह गत स्तर पर, हो यह बात drecognition में आती है।

शस्त्राचारियों का मार्ग शस्त्र के द्वारा शत्रुओं का Physical annihilation यह है अहिंसाचारियों का मार्ग अपने सिद्धान्त को ठीक ढंग से समझ कर

उस पर अडिग रहते हुए जो बात अपने को स्वीकार नहीं, अपनी आत्मा को स्वीकार नहीं उसका निषेध करते हुए, उसके लिए चाहे तो दंड भुगतने के लिए तैयार रहना और अपने आत्म बल का आत्म क्लेश के द्वारा परिचय देना, जिसके कारण सभी के ऊपर अपने सिद्धान्तों का प्रभाव स्थापित करना, यह मार्ग अहिंसा-चारियों का है। इसका भी एक प्रभाव है। आत्म बल का, आत्म क्लेश का बहुत बड़ा प्रभाव है।

इस दृष्टि से जनसम्पर्क, जनजागरण जन शिक्षा और जन संघर्ष ये इसका रास्ता है। किन्तु सबसे प्रमुख बात कि केवल शब्दों से नहीं, तो जनसम्पर्क करने वाले कार्यकर्ता स्वयं अपने अन्दर तक Conviction निर्माण करे, यह idealism निर्माण करे, इसके लिये दण्ड भुगतने की शक्ति, आत्मबल निर्माण करे आदर्श के लिये आत्मार्पण करने की तैयारी करे, इसका नैतिक प्रभाव जनता पर होगा, उसके अन्दर जागरण होगा हमारे भाषणों से नहीं, शब्दों से नहीं, कलाबाजी से नहीं तो प्रत्यक्ष जीवन का उदाहरण देखने के कारण। और जीवन के प्रभाव के कारण जन जागरण, जन शिक्षा होकर एक व्यक्ति आत्मबल से एक एक व्यक्ति समूह आत्म बल से ओतप्रोत होकर शासन को derecognise करेगा। यह हो सकता है। एक व्यक्ति ने शासन को derecognise किया। उसका असर हुआ। इतिहास में भी उदाहरण है, एक एक व्यक्ति का व्यक्ति समूह का भी।

Trence Macswiney का उदाहरण कौन नहीं जानता? ईस्टर रिबेलियन के कारण भी जितनी जन शिक्षा नहीं हो पायी उससे सौ गुना अधिक जन शिक्षा, संघर्ष की तैयारी, Terence Macswiney के इतने दिन के ७४ दिन के अनशन के पश्चात आत्मार्पण के कारण आयरिश जनता में हुई।

एक अभूतपूर्व प्रभाव रहता है। परम्परा है इसकी। जिस तरह के आत्म बलिदान युक्त लोग कानून की कल्पना को प्रतिष्ठा देते हुए भी गलत कानूनों का उल्लंघन करते हैं, इसके लिये दंड भुगतने में उनको हिचकिचाहट नहीं होती। प्रहलाद का उदाहरण है। सोक्रेटिस का उदाहरण है। थोरो का उदाहरण है। एक एक उदाहरण ने इतनी प्रचंड जागृति की जो शस्त्र का संघार नहीं कर सकता। और इस तरह के पूर्व काल में व्यक्तिगत स्तर पर का, आत्मबल का परिचय देने की पद्धति थी इसको Mass technique के नाते, सामूहिक तंत्र

के नाते विकसित करने का प्रयास महात्मा जी ने किया। इसका खास आधार आत्मबल है। शस्त्र के द्वारा शत्रु का Physical liquidation नहीं, तो आत्मबल के द्वारा जनता का जागरण, जनता की शिक्षा, जनता में Conviction निर्माण करना, जनता को अपने समान आत्मक्लेश बर्दाश्त करने, सरकार को करने के लिए प्रवृत्ति करना, यह एक रास्ता है।

इसको हम समझ लेंगे तो और कार्य की दिशा अधिक स्पष्ट होगी लेकिन ये सारा जैसे मैंने कहा जैसे करने वाले हम लोग है। हम स्वयं सरकार को derecognise करने का साहस दिखाये तब हमारे जीवन के प्रभाव से लोग भी derecognise करने के लिये तैयार होंगे। मैं उदाहरण देना चाहता हूं। मैं derecognise का भाषण आपके सामने कर रहा हूं। आपको यह पता हो या न हो आप पर इतना नैतिक प्रभाव नहीं हो सकता। जितना अन्य स्थिति में हो सकता था। कारण क्या ? आप शायद जानते भी हों, न जानते हो किन्तु जो सत्य है उसका प्रभाव होता भी है कि मैं व्यक्तिगत स्तर पर authority को derecognise आज नहीं कर रहा हूं। क्योंकि यही मैं सरकार को derecognise करता हूं। जैसा मैं भाषण दे रहा हूं तो मैं पहली बात यह कहता, कि मैं आपको authority नहीं मानता और इसके कारण authority के नाते हर माह मुझे ५०० रुपये पेन्शन देने का जो निश्चय किया है वो ५०० रुपये मैं आपसे नहीं लूंगा। क्योंकि आपकी authority को मानता ही नहीं हूं। तो आपको रुपये देने का अधिकार क्या ? ये ५०० रुपये पेन्शन लेने से इन्कार करते हुए मैं प्रत्यक्ष व्यवहार में आपकी authority को derecognise करूंगा। उस समय मेरे जीवन से जनता को derecognition की प्रेरणा मिलेगी। केवल भाषण से नहीं मिल सकती।

यह जो derecognition का सिद्धान्त है इसके implications इस तरह में हम लोग समझने का प्रयास करें तो अगली कार्य की दिशा और अहिंसात्मक ढंग से सारा काम सफलतापूर्वक सम्पन्न कैसे कर सकते हैं। इसके बारे में आत्म विश्वास हमारे अन्दर निर्माण हो सकता है। यह समझ लेने की आवश्यकता इसलिये है कि यह आत्म बल का रहस्य न समझते हुए अहिंसात्मक मार्ग में आने वाली कार्यवाहियां हमने की, तो भी उनका प्रभाव नहीं होगा। इस रहस्य को समझ कर हम छोटे छोटे भी काम करेंगे तो उनका बहुत प्रभाव रहेगा।

छोटे भी gestures क्यों न हो, deputation ले जाना है बैजेज पहनना है Prote tresolutions पास करना है, petitions Submit करना है, silent procession, slogans shout करना लाक्षणिक, सांकेतिक hunger strike, हड़ताल, Posters का display, न्यूज Bulletins और साहित्य का वितरण, हुतात्माओं के बड़े बड़े Funerals होतात्म्य दिन का absarvance, demonstrations सरकार द्वारा किये हुए अत्याचारों का प्रचार, शिक्षात्मक group meetings, legislatures का बायकाट, govt. functions का बायकाट general strike बन्द आमरण उपोषण, सत्याग्रह. Notaxcompaign all out non-cooper-ations or civil disobedience जनता सरकार की स्थापना। स्थानिक, even sectional problems के लिये local & sectional agitat-ions ये सारे काम ऐसे हैं जो अहिंसात्मक मार्ग में आते हैं। हम इस मार्ग के रहस्य को समझें, बहुत प्रभाव है, न समझें तो इनका प्रभाव नहीं रहेगा। इसलिए समझ लेने की आवश्यकता है। क्योंकि इस मार्ग की विशेषता यह है कि यहा जन शिक्षा एक अलग बात और संघर्ष एक अलग बात ऐसा bifurcation यहीं। जन शिक्षा और जन संघर्ष दोनों एक ही सिक्के के दो पहलू हैं। माने Mass education through struggle, struggle mass education यह इस मार्ग की विशेष । है। चाहे अरविन्द बाबू की परिभाषा में वह Passive resistance की कल्पना रहे, लोकमान्य तिलक की चतु सूत्री या महात्मा जी का सत्याग्रह रहे, हर एक में Mass education through struggle, struggle through mass education जन शिक्षा और जन संघर्ष एक ही सिक्के के दो पहलू। जनता को पूरे विश्वास में लेते हुए इस तरह से आगे बढ़कर जाना यह जो प्रक्रिया अहिंसात्मक मार्ग की विशेषता है उसके कारण इसका रहस्य समझ लेना आवश्यक है। यह ध्यान में रखने योग्य है कि श्री रामत्रिढास, जो युगोस्लाविया प्रतिकार युद्ध के एक सेनानी रहे तथा युगोस्लाविया के भूतपूर्व डेप्युटी through रहे, उन्होंने पूर्ण विचार मंथन के बाद यह निष्कर्ष निकाला कि कम्युनिस्ट सत्ताओं को हटाने के लिए भी जनता शस्त्रासक्ति बनने बनाने की आवश्यकता नहीं है। गांधी जी से हुई बातों में मतभेद रखते हुए भी श्री त्रिलास कहते हैं, ' It would appear from Contemporary experiners that revolutionary organi sations of the classic type-thoroughly conspiratorial,

military disciplined, and ideologically united or not essential.................. Revolution essential for victory over the communist aligarchs and bureaucrats .... civil wars are even less necessary However recource should be had to all other forms of struggle demonstrations, strikes Protest marches Protest, resolutions and the like, and most important of all open and courageous criticism and moral firmness All historicals experience todate confirms" (Unperfect society)

यह हम समझ लेंगे तो फिर आगे का रास्ता बड़ी आसानी से तय कर सकते हैं। जहां हम संघर्ष की बात कर रहे वहां हैं, वास्तविक विषय को लेकर संपूर्ण क्षेत्र का ठीक ढंग से समन्वय करना पड़ेगा। इससे एक बात सर्वप्रथम हमारे ध्यान में आती है। और वह यानी जहां एक ओर हम सार्वदेशीय प्रबल तीव्र संघर्ष के लिये कृति-प्रतिज्ञ हो रहे हैं, वहां आम जनता की इस संघर्ष के लिये आज तैयारी नहीं, यह वास्तविक्ता है। यह नहीं कहा जा सकता कि पिछले २५ जून ७५ से लेकर आज तक जो कुछ भी संघर्ष हुआ है, इसके कारण आम जनता थक गयी है– यह नहीं कहा जा सकता। क्योंकि अभी तक की लड़ाई का जो प्रमुख रूप से आर० एम० एस०, सर्वोदय, विभिन्न राजनैतिक दल, इनके कार्यकर्ताओं के Cadres ने ही, bear किया आम जनता का Participation सीमित रहा है।

आज जनता तैयार नहीं, उसका प्रमुख कारण यह है कि पिछले कई वर्षों में इस दृष्टि से जन-जागरण का काम नहीं किया गया। Political Propaganda तो हर तरह से हर ओर से काफी हुआ है। Propaganda अलग चीज है, Education अलग चीज है। Education का काम हुआ नहीं और इसके कारण आज जनता तैयार नहीं जनता को तैयार करना, जैसे मैंने कहा, जन सम्पर्क, जन जागरण, जन शिक्षा का कार्यक्रम. स्वयं अपनी आत्मिक तैयारी तथा कार्यकर्ताओं की सारी तैयारी करानी होगी। Back ground बनानी होगी और एक तरह से अपने सम्पूर्ण कार्यक्रम का Phasing करना होगा। जिसमें पहली phase स्वयं की पूर्व तैयारी की रहेगी।

इस पहली Phase के लिये कुछ ज्यादा समय देना पड़ा तो चिंतित होने की आवश्यकता नहीं। This is not waste of time, it is an investment हमारी तैयारी जितनी अच्छी होगी, उतना ही आगे का संघर्ष हम ठीक ढंग से छेड़ सकेंगे, तो यह पूर्व तैयारी की पहली Phase हम समझ लें।

यह तो एक बात। यह हमने पूरी कर ली तो क्या हम यह आशा कर सकते हैं कि उसके पश्चात तुरन्त हम All India level पर सार्वदेशीय संघर्ष छेड़ सकेंगे ? यह भी कल्पना वास्तविकता को छोड़ कर होगी– ऐसा नहीं हो सकता। हमारी आत्मिक तैयारी हो, जन शिक्षा हो, तो भी एकदम सम्पूर्ण जनता अखिल भारतीय स्तर पर संघर्ष के लिए सिद्ध हो जायेगी– यह अवास्तविक बात है। वास्तविकता यही है कि संघर्ष की भी आदत लोगों को लगाने में कुछ समय बिताना पड़ेगा। जन शिक्षा का हमने काम किया तो भी एकदम अंतिम परीक्षा में बैठने के लिए व्यक्ति तैयार नहीं होता। प्रारम्भ से शुरू करना पड़ता है। आज संघर्ष आसानी से लोगों को अभ्यास करने के लिए, आदत लगाने के लिए शुरू किए जा सकेंगे।

पहली Phase पूरी करने के पश्चात जहां, या तो Section of Population संघर्ष के लिए अनुकूल, struggle orented पहले से ही की हो, या जहां Section of population struggle oriented रहे या न रहे, किन्तु सरकार की कृपा के कारण Problems किसी Section के लिए खड़े हुए हों, व जो Problems ही इतने गहरे हो कि उनकी दखल लेना उनके लिये आवश्यक हो जाता है · originally struggle oriented न होते हुए भी यहीं तक Sections of population तैयारी में आ सकता है। यानी Problem oriented, section oridented, दोनों तरह से विचार करते हुए local struggles, sectional struggles और वे भी एकदम अंतिम स्टेज के नहीं, mild mannered। जैसे अभी कहां केवल deputation ले जाना, केवल वेज वेअरिंग करना, केवल Resolutions पास करना, authorites को भेज देना, केवल Silent demonstration करना, कुछ न कहते हुए इस तरह के innocent, mild mannered जैसे ढंग से धीरे धीरे कार्यक्रम देते हुए, और फिर उनकी तीव्रता धीरे से बढ़ाते हुए जैसे जैसे लोगों के मन में तीव्रता बढ़ेगी, mild manners से प्रारम्भ करते हुए तीव्र और अधिक तीव्र manners तक जाना, local problems में Sectional problems में, और इस दृष्टि से सम्पूर्ण क्षेत्र का सम्पूर्ण देश का अध्ययन करते रहना, Section oriented, problem oriented दोनों दृष्टि से विचार करते रहना, जहां जहां Problem निर्माण होता है, वहां कार्यकर्ता पहले पहुंचे, जिनके Problems हैं वे स्वयं संघर्ष oriented न रहे तो भी उन्हें संघर्ष oriented कैसे किया जा सकता है–यह देखे। जो संघर्ष orien-

ted पहले से है ऐसे Sections of Population जैसे मजदूर हैं, किसान हैं, विद्यार्थी हैं किसान को भी Line में लाया जा सकता है इस तरह के Sections के पास पहुंच कर उनको इस कल्पना की जानकारी देने का काम करना। इस तरह Second phase में local & sectional struggles का कार्य आयेगा।

पहले Phase में तैयारी अपनी, दूसरे Phase में Section oriented, Problem oriented thinking करते हुए, Survey लेते हुए, local & sectional struggles ये अलग समय पर होंगें। जिस समय एक Section गरम है बाकी Sections ठंडे रह सकते हैं। जिस समय एक क्षेत्र में Problems के लिये struggle चल रहा है, उस समय बाकी क्षेत्र में कुछ नहीं रहेगा। अलग अलग समय पर अलग अलग Sections उठेंगें, ठंढे हो जायेंगे। लेकिन आज जो एक fear Complex है वह धीरे धीरे हटेगा धीरे धीरे लोगों का हौसला बढ़ेगा। संघर्ष हम कर सकते हैं—इस तरह का आत्म विश्वास उनके अन्दर आयेगा, धीरे धीरे यह Process आगे बढ़ेगा।

यह Second Phase जब पूरी हो जाती है तो फिर हमें देखना पड़ेगा कि third & last phase अहिंसात्मक struggle की हम कैसे ले सकते हैं। Third and last phase लेने से पहले ये सर्व होने चाहिये। Local & sectional struggles के द्वारा हर एक का fear complex कम करते हुए उसको struggle oriented बनाये, इतना तो होना चाहिये। लेकिन इतना होने के पश्चात हम National level-का struggle कैसे launch करते हैं इसका बारीकी से विचार करना पड़ेगा। क्योंकि जैसे मैंने कहा कि इसमें हमें दोनों चीजें Scrutinise करनी पड़ेगी। यशस्विता के लिये आवश्यक जैसे पहले कहा गया कि regime के inherent self Contradictions की परिपक्वता का क्षण और हमारे nonviolent mass rising का क्षण अहिंसात्मक अखिल भारतीय आन्दोलन का क्षण दोनों जितनी मात्रा में सिंक्रोनाइज होंगे उतनी मात्रा में हमारी यशस्विता की guaranteed रहेगी।

इस दृष्टि से एक और objective situation का अध्ययन, दूसरी ओर अब तक जितने ही local और sectional struggle किये हैं, उनका और बाकी सबका एकत्र कैसे sincronisation किया जा सकता यह देखना और फिर national level struggle का timing और self Contradictions का ripening का timing दोनों का sincroni ation बराबर करना, यह कुशलता पूर्वक करना पड़ेगा। यह रास्ता है - जिस रास्ते से जाना है। सिर्फ इस रास्ते से जाना है और हम जायेंगे तो objective situations और हमारा subjective आत्मबल, subjective कार्य दोनों के Sincroni sation यह संघर्ष हम यशस्वी कर सकेंगे, इसमें कोई सन्देह नहीं। किन्तु यह सम्पूर्ण जनता के करने का या सम्पूर्ण जनता के द्वारा करवा लेने का काम है।

और इसमें स्वयं पहले से एक जागृत, संघर्षशील जनता की शक्ति, जनता का मोर्चा इस नाते मजदूर क्षेत्र में भा० म० संघ काम करते आ रहा है। इसके कारण भारतीय मजदूर संघ की विशेष जिम्मेवारी इसमें आ जाती है। as a Spearhead of the movement क्योंकि हमारा क्षेत्र ही ऐसा है जिसको Section oriented thinking करने वाले भी Spearhead के नाते मानते हैं।

Problems तो हमारे यहां है ही, बढ़ने वाले भी हैं, तो इस स्थिति में हमारी विशेष जिम्मेदारी इस संघर्ष में आ जाती है। इस दृष्टि से हमें क्या करना है, इसका विचार बैठक में होनी चाहिये। यह स्पष्ट है कि हमें अपनी यूनियनों का संगठन ठीक मजबूत बनाना पड़ेगा। अपने सदस्यों की शिक्षा का कार्यक्रम ठीक ढग से करना पड़ेगा। साथ ही साथ इस तरह की जो जागृत जन शक्तिया मजदूर क्षेत्र में हैं इस तरह की संस्थाओं के साथ सम्पर्क और समन्वय करना पड़ेगा। Broadest possible Common Platform खड़ा करना पड़ेगा। सबको एक सूत्र में किस ढंग से लाया जा सकता है – इसका प्रयास करना पड़ेगा। इसमें अग्रसरत्व लेना पड़ेगा और फिर इस तरह का एक Broad based platform या Coordination मजदूर क्षेत्र में निर्माण करने के पश्चात या उसके साथ साथ अन्यान्य क्षेत्रों में भी जो संघर्षशील शक्तियां हैं, उनके साथ भी Co-ordination प्रस्थापित करना पड़ेगा। इस लिये स्वयं अपनी शक्ति बढ़ाने और विभिन्न सघर्षशील शक्तियों के साथ समन्वय Co-ordination प्रस्थापित करने का काम आने वाले दिनों में हमें करना है। ऐसा कुछ लग रहा है कि इतिहास में श्रमिक क्षेत्र को और श्रमिक क्षेत्र में राष्ट्र शक्ति के आविष्कार के मोर्चे के रूप में खड़े भा० म० सघ को, इस ऐतिहासिक सकट काल में कुछ ऐतिहासिक मिशन allot किया गया है और वह मिशन यही दिखता है कि इस आपातकालीन स्थिति में से राष्ट्र को जनता को जन तन्त्र को, मजदूर शोषित दलित पीड़ित जनता को सुरक्षित बचा कर ले जाने का जो कार्य है, इसलिये जो संघष करना है इस संघर्ष में अपने क्षेत्र की विशेषताओं के कारण भा० म० संघ जनता के Vanguard के रूप में काम करे। यह एक Historic mission इतिहास ने भा० म० संघ को प्रदान किया है। ऐसा कुछ आभास हो रहा है। इस Historic mission को पूरा करने की तैयारी हम किस तरह कर सकते हैं–बड़ी बारीकी के साथ आप सब भाई विचार करें। यही केवल इस समय प्रार्थना करनी है।

–– जय भारत ––